हैन्सल और ग्रैटल

एक समय की बात है एक विशाल जंगल के किनारे एक गरीब लकड़हारा रहता था. अपनी पत्नी और दो बच्चों, हैन्सल और ग्रैटल, की देखभाल वह मुश्किल से ही कर पाता था. इस कारण वह बहुत दुःखी रहता था. एक दिन ऐसा समय आया कि उनके घर में खाने के लिए सिर्फ एक ब्रैड ही बची थी. वह बहुत ही व्याकुल हो गया.

उस रात जब सोने के लिए लकड़हारा और उसकी पत्नी बिस्तर में लेटे हुए थे, पत्नी ने कहा, “सुनो, अगर हम भूख से मरना नहीं चाहते तो तुम्हें एक काम करना पड़ेगा. कल सुबह तुम दोनों बच्चों को अपने साथ ले जाना. जो थोड़ी ब्रैड बची है वह उनको दे देना और उन्हें जंगल के अंदर ले जाना. लड़कियाँ इकट्ठी करके आग जला देना और जब आग जल रही होगी बच्चों को वहीं छोड़ कर तुम वापस आ जाना.” पति ने उसकी बात न मानी पर पत्नी ने उसे तब तक शान्ति से सोने न दिया जब तक कि उसने पत्नी की बात स्वीकार नहीं कर ली.

बच्चों ने माँ की बात सुन ली थी और ग्रैटल रोने लगी. “चुप,” हैन्सल ने फुसफुसा कर उसके कान में कहा. “सब ठीक हो जाएगा. एक बात मेरे मन में आई है.” फिर वह चुपचाप बिस्तर से उठा, अपनी जैकेट पहनी और घर से बाहर आ गया. चाँद की रोशनी में ज़मीन पर पड़े छोटे-छोटे सफ़ेद कंकड़ चमक रहे थे.

हैन्सल ने सावधानी के साथ कंकड़ उठा लिए और जितने भी वह अपनी जैकेट की जेबों में भर सकता था उतने उसने भर लिए. फिर वह घर के अंदर आ गया और अपनी छोटी बहन के पास लेट गया और उसे नींद आ गई.

अगली सुबह, सूर्य के उदय होने से पहले ही माता-पिता आये और दोनों बच्चों को नींद से जगा दिया. दोनों को ब्रैड का एक-एक छोटा टुकड़ा दिया. ग्रैटल ने दोनों टुकड़े लेकर अपने एप्रन में रख लिए क्योंकि हैन्सल की जेबें कंकड़ों से भरी हुई थीं. फिर सब जंगल की ओर जाने वाले रास्ते पर चल दिए. जब वह जंगल की ओर जा रहे थे तब हैन्सल बार-बार रुक कर अपने घर की ओर देखता था. उसके पिता ने कहा, "तुम बार-बार रुक कर पीछे क्यों देखते हो?"

"ओह," हैन्सल ने उत्तर दिया, "मैं अपने बिल्ली के सफ़ेद बच्चे को देख रहा हूँ. वह छत पर बैठा है और मुझे अलविदा कहना चाहता है." लेकिन जब भी वह पीछे देखता तो चोरी-छिपे एक कंकड़ रास्ते पर गिरा देता था.

उसकी माँ ने कहा, "आगे चलते रहो! वह तुम्हारा बिल्ली का बच्चा नहीं है. वह तो चिम्मनी के ऊपर सुबह का सूर्य चमक रहा है." लेकिन हैन्सल पीछे मुड़ कर देखता रहा और हर बार एक कंकड़ नीचे गिराता रहा.

और इस तरह वह सब लंबे समय तक चलते रहे. अंतत वह विशाल जंगल के बीच में पहुँच गये. वहाँ वह रुक गए और उन्होंने जलाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठीं कर लीं. उनके पिता ने आग जला दी और जब आग खूब ज़ोर से जल रही थी उनकी माँ ने कहा, “बच्चो, अब कुछ देर यहाँ आराम कर लो. तुम्हारे पिता और मैं लकड़ियाँ काटने जा रहे हैं. यहाँ आग के पास बैठ कर हमारे लौटने की प्रतीक्षा करो.”

बच्चे आग के पास बैठ गये और उन्होंने अपनी रोटी खायी. जब बहुत अँधेरा हो गया तो ग्रैटल रोने लगी. लेकिन हैन्सल ने उससे कहा, “थोड़ी देर और प्रतीक्षा करो, तब तक चाँद निकल आएगा.”

जब चाँद निकला तो उसके प्रकाश में सफ़ेद कंकड़ चमकने लगे और उन्हें घर का रास्ता दिखाने लगे. हैन्सल ने ग्रैटल का हाथ पकड़ लिया और वह दोनों सारी रात चलते रहे. सुबह होते ही वह घर पहुँच गये. उनको देख कर पिता बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि जो कुछ उसने किया था उससे वह मन ही मन बहुत दुःखी था. लेकिन उनकी माँ को बहुत गुस्सा आया.

कुछ समय बाद उनके पास खाने के लिए फिर कुछ न था. और फिर एक बार, बिस्तर में जाने के बाद, उन्होंने माँ को पिता से यह कहते हुआ सुना कि बच्चों को दुबारा जंगल के अंदर, जितनी दूर पहले गये थे उससे भी दूर, ले जाना होगा. ग्रैटल फिर से रोने लगी. हैन्सल फिर से उठ कर कंकड़ इकट्ठे करने के लिए घर से बाहर जाने लगा. लेकिन जब उसने घर का दरवाज़ा खोला तो देखा कि माँ ने उस पर ताला लगा दिया था. हैन्सल भी निराश हो गया और वह अपनी बहन को दिलासा न दे पाया.

अगले दिन, सूर्य निकलने से पहले ही वह सब उठ गये. दोनों बच्चों को ब्रैड का एक-एक छोटा टुकड़ा माँ ने दिया. जब वह जंगल की ओर जा रहे थे तब हैन्सल कई बार रुका और मुड़ कर उसने अपने घर को देखा. उसके पिता ने पूछा, “मेरे बच्चे, तुम बार-बार रुक कर पीछे अपने घर की ओर क्यों देख रहे हो?”

“ओह,” हैन्सल ने कहा, “मैं अपने नन्हे कबूतर को देख रहा हूँ जो घर की छत पर बैठा है और मुझे अलविदा कहना चाहता है.” लेकिन चोरी-छिपे उसने रोटी के टुकड़े कर लिए थे और जब भी वह पीछे मुड़ता था वह रास्ते पर रोटी के टुकड़े गिरा देता था.

उसकी माँ ने कहा, “आगे चलते रहो! वह तुम्हारा नन्हा कबूतर नहीं है. यह तो चिमनी पर सुबह के सूरज की किरणें चमक रही हैं.” लेकिन हैन्सल पीछे देखता रहा और जब भी वह पीछे देखता वह रास्ते पर रोटी का एक टुकडा गिरा देता.

और जब वह जंगल के बहुत अंदर वहाँ पहुँच गये जहाँ जंगल बहुत घना था, वह रुक गये. उनके पिता ने लकड़ियाँ इकट्ठी करें के आग जला दी. उनकी माँ ने कहा कि वह लड़कियाँ काटने जा रहे थे, बच्चे आग के पास बैठ कर आराम करें और उनके लौटने की प्रतीक्षा करें. आग के पास बैठ कर ग्रैटल ने रोटी के टुकड़े से आधा भाग हैन्सल को दे दिया क्योंकि उसने अपना टुकड़ा तोड़ कर रास्ते पर गिरा दिया था. वह शाम होने तक माता-पिता की प्रतीक्षा करते रहे पर वह लौट कर न आये.

जब अँधेरा हुआ और चाँद निकल आया तो हैन्सल रोटी के उन टुकड़ों को ढूँढने लगा जो उसने रास्ते पर गिराये थे. लेकिन वह नहीं मिले. जंगल के पक्षी उन्हें खा गये थे.

हैन्सल फिर भी घर जाने का रास्ता खोजना चाहता था. उसने ग्रैटल को साथ लिया और चल पड़ा. वह सारी रात और सारा दिन चलते रहे. पर वह विशाल जंगल में भटक गये थे.

तीसरे दिन, भूखे और ठिठुरते, वह एक छोटे से घर के पास पहुँचे. वह घर ब्रेड का बना हुआ था, उसकी छत पैनकेक की बनी थी और खिड़कियाँ शूगर-कैंडी की थीं. उस घर को देख कर बच्चे इतने प्रसन्न हुए कि दौड़ कर उसके पास आ गये, हैन्सल छत पर चढ़ गया और ग्रैटल खिड़की पर. और वह खूब खाने लगे.

हैन्सल छत का एक बड़ा टुकड़ा खा रहा था और ग्रैटल खिड़की के शीशे खा रही थी. उन्हें अंदर से एक तीखी आवाज़ सुनाई दी.

“यह कौन कुतर रहा है मेरे घर को ! क्या मिट्टी में मिला देगा वो इसको!” बच्चे इतने डर गये कि जो कुछ उन्होंने अपने हाथों में पकड़ रखा था उसे गिरा दिया.

तभी एक बूढ़ी औरत दरवाज़े से बाहर आई. जब उसने भूखे बच्चों को देखा तो अपना सिर हिलाया और कहा, “ओह, बेचारे बच्चे, आओ मेरे साथ भीतर आ जाओ. घर में खाने के लिए बहुत कुछ है. मैं तुम दोनों की अच्छी देखभाल करूंगी.” उसने दौनों के हाथ पकड़ लिए

और उन्हें घर के अंदर ले आई. और उन्हें बहुत बढ़िया भोजन खाने के लिए दिया. फिर उसने उनका बिस्तर बिछाया. थके हुए दोनों बच्चे बिस्तर में लेटते ही सो गये.

अगली सुबह हैन्सल और ग्रैटल के नींद से जागने से पहले ही बूढ़ी औरत हौले से बिस्तर के पास आई. उसने उन्हें मज़े से सोते देखा तो मन ही मन सोचा, “अरे यह तो बड़ा स्वादिष्ट खाना है मेरे लिए!” उसने हैन्सल को उठाया और उसे घर से बाहर ले आई और उसे एक छोटे से पिंजरे में बंद कर दिया, जैसे कि वह एक नन्हा सूअर हो. फिर वह घर के अंदर आई और ग्रैटल को झकझोरा और चिल्ला कर कहा, “उठो आलसी लड़की! जाओ और कुएं से पानी निकाल कर लाओ और फिर काम पर लग जाओ और खाने के लिए कोई अच्छी चीज़ बनाओ. तुम्हारा भाई वहाँ उस पिंजरे में बंद है. हम उसे खिला-पिला कर मोटा-ताज़ा बना देंगे और जब वह खूब मोटा हो जाएगा तब मैं उसे खाऊँगी.”

ग्रैटल बूढ़ी औरत से बहुत डरती थी और जो वह उसे कहती थी उसे वह सब करना पड़ता था. हर दिन वह हैन्सल के लिए पानी और ढेर सारा अच्छा खाना लेकर आती. स्वयं उसे खाने के लिए बस केकड़े की खाल ही मिलती थी. हर दिन बूढ़ी पिंजरे के पास आती और हैन्सल से अपनी एक ऊँगली बाहर निकालने के लिए कहती ताकि उसे छू कर वह पता लगाए कि वह कितना मोटा हो गया था. हर दिन हैन्सल अपनी ऊँगली के बजाए एक हड्डी बाहर निकाल देता था.

चार सप्ताह बीत गये. एक शाम बूढ़ी को लगा कि हैन्सल अधिक मोटा न हो रहा था. उसने ग्रैटल से कहा, “जल्दी जाओ और देगची को पानी से भर दो. कल सुबह मैं उसे मार कर पका डालूंगी, चाहे वह मोटा हुआ हो या नहीं. जब तक तुम पानी लेकर आओगी मैं आटा गूंध लूंगी. जब वह देगची में उबल रहा होगा तब हम ब्रैड बना लेंगे.”

अगली सुबह जब ग्रैटल देगची के नीचे चूल्हे में आग लगाने के लिए बाहर आई तो तंदूर में ब्रैड पहले से ही पक रही थी. बूढ़ी औरत ने ग्रैटल को पुकारा कर कहा, “इधर आओ, अभी इसी समय! ऐसा लगता है कि ब्रैड जल्दी ही तैयार ही जायेगी. मेरी आँखें कमज़ोर हो गई हैं, इसलिए तुम तंदूर के अंदर देखो और बताओ कि वह सुनहरी भूरी हो गई है या नहीं. अगर तंदूर के अंदर तक तुम देख नहीं सकती तो इस बोर्ड पर चढ़ जाओ, मैं धकेल कर तुम्हें अंदर कर दूंगी. तंदूर के अंदर बहुत जगह है. एक बार तुम अंदर पहुँच गई तो तुम्हें सब दिखाई दे जाएगा.”

वह बूढ़ी औरत तो ग्रैटल को भूनने के लिए तंदूर के अंदर बंद कर देना चाहती थी. लेकिन ग्रैटल भांप गई कि बूढ़ी औरत क्या सोच रही थी. उसने औरत से कहा, “मुझे पता नहीं कि मुझे क्या करना है. क्या आप वह कर के मुझे बता सकती हैं. अगर आप बोर्ड पर चढ़ जाएँ तो मैं आपको तंदूर के अंदर धकेल दूंगी.”

बूढ़ी औरत बोर्ड पर चढ़ गई और ग्रैटल ने उसे तंदूर के अंदर, जितनी दूर तक धकेल सकती थी, धकेल दिया. फिर उसने तंदूर का दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया और उसकी लोहे की कुंडी बाहर से बंद कर दी. तंदूर के अंदर बंद बूढ़ी जादूगरनी खूब चीखी-चिल्लाई. ग्रैटल भाग गई और बूढ़ी जादूगरनी जल कर मर गई.

ग्रैटल भाग कर सीधी हैन्सल के पिंजरे के पास आई और पिंजरा खोल दिया. उसने भाई को बताया कि उसने क्या किया था. दोनों बच्चे प्रसन्नता से एक-दूसरे को प्यार करने लगे.

अंतिम बार वह उस घर के अंदर आये वहाँ हर जगह बहुमूल्य और चमकदार हीरे-जवाहरात दिखाई दिए.

जितने भी हीरे-जवाहरात वह साथ ले जा सकते थे वह उन्होंने ले लिए और घर चल दिए. वह चलते रहे, चलते रहे और आखिरकार उन्हें जंगल जाना-पहचाना सा लगा.

जब वह घर पहुँचे तो उनको देख कर उनके पिता की आँखों से आंसू बहने लगे. उसने बताया कि उनकी माँ का निधन हो गया था. अपने बच्चों के बिना पिता बहुत ही उदास था.

जेबों में रखे हीरे-जवाहरात उन्होंने पिता को दिए. लकड़हारा और उसके बच्चों ने अपना शेष जीवन प्रसन्नता से बिताया.

समाप्त